IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"तिरिछ" और "पिता" कहानी का तुलनात्मक अध्ययन

भाग्यश्री साहू

विद्यार्थी,हिंदी विभाग, रेवेनशॉ विश्वविद्यालय,ओडिशा,भारत

सारांश:

दोनों कहानियों को प्रमुख रूप से तुलनात्मक अध्ययन करें तो निष्कर्ष तौर पर हम देखेंगे की .

ष्तिरिछष कहानी का संबंध श्पिताश से हैए लेखक के सपने से है और शहर के बारे में डरावना सोच रखने वाले लोगों से संबंधित है। आधुनिकीकरण या फिर शहरी संस्कृति के प्रभाव से लोग किस तरह से धीरे.धीरे संवेदना शून्य और अमानवीय होते जा रहे हैं इसका वर्णन इस कहानी में की गई है। इसमें गांव एवं शहर की जीवन शैली का तुलनात्मक अध्ययन सफलता पूर्वक किया गया है।

ष पिताष कहानी की जो विशेषता आज की परिदृश्य में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी रिश्ते की कहानी है। जिसमें पिता एक दृढ़वान घोषित किया गया है ए वह पिता जो नई पीढ़ी को स्वीकार नहीं कर रहे हैं ।अगर इस कहानी में कोई संक्रमण दौर पर गुजर रहा है तो वह पिता नहीं है बल्कि वह नई पीढ़ी का वाहक उसके पुत्र है। वह नहीं पीढ़ी जो अपने पिता को छोड़ भी नहीं पा रही है और पिता के उसे स्थिति को देख भी नहीं पा रही है और उसे वह स्वीकार भी नहीं कर पा रही है। पिता को त्याग नहीं पा रही है और पिता को पूर्ण रूप से स्वीकार भी नहीं कर पा रही है। कहानी की दृष्टिकोण से दया का पात्र पिता नहीं है दया की पात्र नई पीढ़ी का प्रतिनिधि है।

सूचकांक शब्दरू

नई पीढ़ी एपुरानी पीढ़ी एशहरी जीवनएआधुनिकीकरण।

प्रस्तावनारू

हिंदी कथा साहित्य में एक चर्चित कथाकार के रूप में ज्ञान रंजन और उदय प्रकाश परिचित है। उन्होंने एक लंबी यात्रा इस क्षेत्र में तय किए हैं। ष्तिरिछष और ष्पिताष दो प्रमुख कहानीकारों की महत्वपूर्ण कहानी है ष्तिरिछ ष उदय प्रकाश के कहानी और ष्पिताष ज्ञान रंजन की कहानी है।

उदय प्रकाश मूल रूप से नवे दशक के प्रमुख कहानीकार हैं। उनके कई कहानी संग्रह आए हैं. दरियाई घोड़ाए तिरिछ और अंत में प्रार्थना एदत्तात्रेय के दुख आदि। उदय प्रकाश आठवें और नवे दशक में आए हुए जो राजनीतिक और व्यवस्थागत परिवर्तन में मनुष्य की स्थिति को मुख्य विषय बनाया ।साथ.साथ उदय प्रकाश ग्रामीण परिवेश से चरित्र को लेते हैं और शहर की जो बुनियादी व्यवस्था से ग्रामीण पात्रों को टकरा देते हैं ।उदय प्रकाश की कहानी बनावट का एक मूलभूत जो स्वरूप है यह है।

नई कहानी के बाद आए साठोत्तरी कहानी के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर का नाम ज्ञान रंजन है ।ज्ञान रंजन की पहली कहानी ष्मनहूस बांग्लाष 1960 में प्रकाशित हुई है और अंतिम ष्क्षण जीवीष1977। ज्ञान रंजन हिंदी कहानी को जीवन का मुहावरा प्रदान किए हैं। आज के जीवन का पहचानने की क्षमता ज्ञान रंजन की कहानी से विकसित होती है ।यदि साठोत्तरी कहानी हम कही पाते हैं तो उस रचनाकार का नाम ज्ञानरंजन है। ज्ञान रंजन जी ने बहुत ज्यादा तो कहानी नहीं लिखे लेकिन 25. 30 कहानी की बीच में उनकी कहानी आती है ।ष्सपना अभीष लगभग उनके 25 कहानियों का संग्रह है ।उसमें लगभग वह सारी कहानियां शामिल है जो ज्ञान रंजन जी को प्रसिद्धि हासिल करने में सहायक सिद्ध हुए है।

ष्पिताष कहानी ज्ञान रंजन की प्रमुख कहानी है ।ज्ञान रंजन की पीढ़ी पर अगर हम विचार करें तो साठोत्तरी यानी की 60 के बाद का जो समय उसे समय में आए। जो मानव जीवन में बदलाव हैए आधुनिकता ने जिस तरह से मानव जीवन में प्रवेश किया है और उसे प्रवेश करने के कारण जो मनुष्य की नैतिक दिशा में भावबोध में परिवार पीढ़ीगत अंतर आ रहा है उसके वह कुशल चितेरे हैं ।ष्पिताष कहानी इसी भावबोध को प्रकाश करती है।

मूल रूप से दो पीढ़ी के यह दो प्रमुख कहानीकार है ।अगर हम कहानियों की तुलना करें तो दोनों के जो प्रमुख चरित्र है वह है पिता। लेकिन इन पिताओ में पर्याप्त टक्कर है।

साहित्यावलोकन रू

कहानी का जब हम तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो हमें यह देखना होता है कि हम किन आधारों पर यह तुलना करें तुलना करने का एक आधार तो सामाजिक परिवेश एराजनीतिक परिवेशए और साथ.साथ आर्थिक परिस्थितिया है। कहानी के तत्व हैए जो एक परंपरागत तत्व है ।जो हैडसन और एडगर द्वारा सुझाए गए तत्व है। जिसमें से प्रस्तावनाए कथानक एदेशकाल ए पात्र चरित्र चित्रण एसंवादए यह तमाम सारे संदर्भ बनते हैं। जहां पर हम कहानियों का तुलनात्मक आधार ले सकते हैं ।लेकिन मुझे लगाता है की ऐसी कोई भी तुलना इन तत्वों के आधार पर कहानी को समझने में बहुत ज्यादा तक हमारी सहायता नहीं करती है ।मूल रूप से किसी कहानीकार का जो उद्देश्य होता है वह यह कीए वह कहानी लिखते समय अपने समय को अपने भवभूत को अपने उसे विषय को जिस विषय को वह कथा संरचना का हिस्सा बन रहा है एउसको कैसे आगे रखता है एअगर इन दृष्टियों से विचार करेंगे तो मूल रूप से इन दोनों कहानियों का अध्ययन हम कर सकते हैं।

षपिता ब्कहानी मूल रूप से मध्यवर्गीय जीवन एक संयुक्त परिवार की जीवन के भीतर जो आ रहे बदलाव है और इन बदलाव के आने के साथ जो परिवार के भीतर तनाव है एउस तनाव को ज्ञान रंजन ने रेखांकित कर रहे हैं ।षपिताष कहानी में जो पिता हैए लेखक बताता है कि पिता बहत जिद्दी है ।वह आधुनिकता की तरफ नही है ।यह आधुनिकता जो आजादी के बाद भारत में एक क्लासिकल पूंजीवाद दौर में और तकनीक मदद से पूरे समाज को प्रभावित कर रही है उसे आधुनिकता को स्वाभाविक रूप से ग्रहण नहीं कर पाते एक प्रकार से उसका वह विरोध करते हैं ।यह पिता कहानी में बार.बार दिखाई देता ।

ष पिता ब्कहानी के शुरुआती परिवेश में पिता पंखे का इस्तेमाल नहीं करती। पंखा एक प्रकार से अधुनिकी कारण है। तकनीक माध्यम से भी आधुनिकता घर में प्रवेश करती है। और पिता तकनीक के उपकरणों से आई हुई आधुनिकता का प्रत्याख्यान करते हैं ।वह पंख प्रयोग करना नहीं चाहते हैं ।वह किसी पंखे के नीचे सोना नहीं चाहते हैं। वातावरण भीषण गर्मी का है और गर्मी में पंखा एक मानवीय आवश्यकता है। लेकिन पिता परंपरागत जो उपकरण है उसका उपयोग करते हैं ।वह अपने हाथ के पंखे का प्रयोग करते हैं ।पिता घर के भीतर सोना नहीं चाहते हैं ।वह बाहर किसी घाट पर सोना पसंद करते हैं। वह सारी रात कहानी का जो परिवेश है वह एक रात का है जो लगभग 11रू00 बजे के आसपास से शुरू होती है सुबह 5रू00 तक चलती है यानी 6 से 7 घंटे का जो समय है ।इसी समय को कहानीकार ने पिता कहानी में व्यक्त किया है।

षपिताष कहानी प्रस्तावना भूमिका रहित कहानी है। कहानी का आरंभ में दो पीढ़ियों की जो बेचैनी है वह यहां पर सीधे.सीधे दिखाई देता है। ज्ञान रंजन की कहानी षपिताष वह एक प्रकार से मध्यम वर्ग की कहानी है। यहां पर पिता शहर में रहते हैं और शहर के भीतर जो वातावरण है उसका ज्ञान रंजन सामने रखते हैं । वह परिवेश उसे रात का अधिक घनीभूत बनता है ।कहानी में ज्ञान रंजन ने गर्मी के परिवेश को पिता के उन हरकतों से सामने ले आते हैं जिसमें पिता बाहर रहकर के गर्मी के कारण वह सो नहीं पाते। कभी वह खाट में पानी छिड़क कर गीला करते हैं ।कभी जब उनको नींद नही आ रही है वह सामने पेड़ से गिरते आम को उठाने चले जाते हैं ।कभी वह डंडा फटकारते हैं। किसी बिल्लियां कुत्ते की आवाज को भगाने के लिए उसे तरफ दौड़ते हैं।

कहानी में जो व्याख्यानकर्ता है उसके मन में तीव्र बेचैनी है वह पिता के द्वारा किए गए कार्यों के माध्यम से व्यक्त हो रही है । पूरी कहानियां में जो तनाव है वह पिता के कृत्य के माध्यम से व्यक्त हो रही है। लेखक सिर्फ उसके बात को देख रहा है। कहानी में यह दिखाया गया कि पिता एक जिद्दी किस्म की आदमी है । व्याख्याकार बार.बार कहता है वह एक विलक्षण और विचित्र व्यक्ति है। आधुनिक भावबोध को इनकार करते हुए एक पुरानी पीढ़ी का व्यक्ति और एक नई पीढ़ी व्यक्ति ए उन दोनों के विचारों को लेकर जो टकराहट है वह बहुत खुलकर सामने आती है । इसलिए पिता कहानी एक प्रकार के मध्यवर्गीय संयुक्त परिवारों की आधुनिकता को लेकर तनाव की कहानी है।

जहां तक षतिरीछष का सवाल है उदय प्रकाश 90 दशक के कथाकार है ।आठवें दशक से उन्होंने कहानी लिखनी शुरू किया है और आजाद भारत का जो राजनीतिक परिवेश है वह काफी बदल चुका था।पृष्ठभूमि के रूप में ज्ञान रंजन की नेहरू व्यवस्था का जो मोहभंग है उस पृष्ठभूमि में मध्यम वर्गीय जीवन की कहानी का परिवेश लिया।यहां पर एक प्रकार से इमरजेंसी के बाद यह जो क्लासिकल पूंजीवाद का जो दौर है वह थोड़ा था। क्रूर और हिंसक और भयावहता चेहरा सामने आता है। इसलिए षतिरिछ ब्कहानी है वह अपने में बेहद क्रूरए मानवीय प्रति हिंसा की कहानी है ।इस कहानी का भावबोध है ।वह आठवें नवे दशक का भावबोध है।जहां पर पूंजी और तकनीक व्यवस्था मिलकर के मनुष्य का आखेट करती है । विकास के दौरान जो आधुनिक है वह आधुनिक किन खतरों में गुजर सकते हैं इसकी कहानी है।

ष तिरिछ ब्कहानी का शुरुआत इन पंक्ति से होती है .ड्इस घटना का संबंध पिताजी से है मेरे सपने से है और शहर से भी शहर के प्रति जो एक जन्मजात भाग्य होता है उससे भी हैष। यह एक प्रकार के संरचना जिसमें प्रस्तावना की तरह बात को रखते हैं ।षतिरिछष कहानी का जो पिता है वह पिता एक प्रकार से ग्रामीण परिवेश के पिता है ।शहर जाना उनको अच्छा नहीं लगता है ।उन्हें भय लगता है ।वह अपनी बनाई हुई दुनिया में मग्न रहने का चाहते हैं। षतिरिछ ब्कहानी में जो तिरिछ शब्द है वह बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि उदय प्रकाश अपनी कहानियों में और मानवीय कृति एक व्यवस्था द्वारा रची हुई एक मनुष्य के विरुद्ध द्वारा रची गई जो तमाम सारी दुरसंधियां है। उसे खोलकर रख दिए हैं । तिरिछ के बारे में कहा जाता है कि तिरिछ एक विषैला जानवर जिसे विषखापर कहा जाता है। वह तिरिछ पिता को काट लेता है। तिरिछ एइसको लेकर जो लोग विश्वास है एउसको लेकर जो परंपरागत नियम समाज में फैली हुई है इसके बारे में उदय प्रकाश जी ने विस्तार में बात करते हैं। तिरिछ एक प्रकार से सांकेतिक है। कहानी या साहित्य में बात को संकेतों के माध्यम से व्यक्त की जाती है तिरिछ

जो है भले ही विषैला जानवर लग रहा है जिसके काटने पर पिता अंततः मृत्यु के शिकार होते हैं लेकिन उनको तिरिछ ने नहीं काटा है। बल्कि पूंजी तकनीक व्यवस्था के गठजोड़ से जो बुनी गई पूरी संरचना है विकास की उस विकास ने काटा है पिता को ।उस विकास के द्वारा काटे गए पिता की मृत्यु अंतः शहर में जाकर होता है । तिरिछ कहानी का जो प्रमुख मोड है वह है यह है कि शुरू में पिता के बारे में उदय प्रकाश बताते हैं कि पिता किसी तरह से शहर जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं ।पिता को तिरिछ काट लेता है शाम 6रू00 बजे के आसपास। अगले दिन ही किसी मुकदमे के सिलसिले में शहर जाना है ।तो कहानी यहां से शुरू होती है कि पिता को तिरिछ काट लिया है और सीरीज के काटने से क्या.क्या हो सकता हैः तिरिछ के बारे में कहा जाता है कि वह अगर काट कर थोड़ी दूर जाकर के पेशाब करके उसमें लौट ले यानी कि उसमें पलट जाए तो निश्चित तौर पर जिसको काटा है उसकी मृत्यु सुनिश्चित है ।कहानी में यह जो रूढ़ी हैए यह जो लोग विश्वास से हैएजो अंधविश्वास से हैए यह जो मिथकीय भवभूमि हैए वह उदय प्रकाश की कहानी संरचना की दृष्टि से बाकी कहानीकारों से अलग करती है।

कथानक के अनुसार जो तुलनात्मक अध्ययन है वह यह है कि इसमें पिता जब शहर में जाते हैं तो हम देखते हैं कि वह शहर तक पहुंचते पहुंचते एक प्रकार से आत्मनिर्वासित व्यक्ति सा हो जाता है ।यह जो निर्वासन के प्रक्रिया है वह एकदम तिरिछ कहानी में आती है। उसे कुछ याद नहीं रहता है। रास्ते में जब वह ट्रैक्टर पर जा रहा है जो लोग मिलते हैं उसमें से एक व्यक्ति जो ज्योतिष भी है वैद्य भी है। वहां पर बात चलती है कि उसे तिरिछ ने काटता है ।वह कहता है की तिरिछ के काटने का इलाज है और वह इलाज यह है कि धतूरे के बीच को पीसकर उसे पी जाना है ।रास्ते में उन्हें धतूरे के बीच का काढ़ा है एउसे पिलाया भी जाता है। और 10रू00 बजे के आसपास जब शहर में प्रवेश करते हैं तो लगभग उनकी चेतन वहां पर हिलने लगते हैं ।अपने वकील से मिलते हैं एबैंक जाते हैं एथाने में जाते हैं ।पूरा दृश्य अंत में एक नेशनल रिसोर्ट बाहर मैदान में जाता हैं। यह जो भयानक स्थिति है पिता जब शहर में पहुंचते हैं 10रू00 बजे से शाम 6रू30 तक इन 8 घंटे में जिस तरह की वर्णन उदय प्रकाश ने की है वह बहुत महत्वपूर्ण है ।वह एक प्रकार से समूचे क्रूर व्यवस्था की रसे रसे को विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से सत्ता और व्यवस्था की जो आधुनिकी उपकरण है ।जो एक संस्थाएं हैं वह संस्थाएं किसी तरह एक मनुष्य को समाप्त कर रहा है इसके उदय प्रकाश ने कहानी केंद्र में लाते हैं।

बुनियादी तौर पर हम देखे तो लगेगा कि तिरिछ के पिता में और ज्ञान रंजन के पिता में दोनों चित्रों में बहुत बुनियादी अंतर है ।कहानी के बनावट में अंतर है ।उदय प्रकाश का नाम प्रायतरू जादुई यथार्थवाद से जोड़ा जाता है । जादूई यथार्थवाद में मिथकए विश्वास एमान्यता एधारणा के माध्यम से कहानी लिखी जाती है ।ष्तिरिछ ष्कहानी में उदय प्रकाश इस प्रविधि का उपयोग करते हैं यह एक शिल्प भी है एक संरचना भी है ।लेकिन लेखक इसका प्रयोग क्यों किया ध्लेखक मूल भाव से यथार्थ की पुनः रचित करने के लिए अपने समय की वास्तविकताओं को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने के लिए अलग.अलग समय में अनेक उपकरणों का प्रयोग करता है वह कोई भी कथाकार हो।

ज्ञान रंजन के ष पिताष कहानी है उसमें जो उन्होंने उपकरण का इस्तेमाल किए हैं वह एक प्रकार से मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकता या उनके यथार्थ का वर्णन है ।उसका जो कालखंड उन्होंने लिया बिल्कुल एक ठहरा हुआ समय है ।जो हमे ज्ञान रंजन के पिता कहानी में मिलेंगे ।क्योंकि वह समय बढ़ता नहीं है वह रात की गर्मी की तीव्र बैचेनी से लग रहे हैं ।जो समय है उसे समय में सिर्फ पिता की जो गतिविधियां है और पिता की गतिविधियों को देखते हुए व्याख्यानकर्ता भीतर जो तनाव है उसको बता रहा है। इन कहानी में जहां तक समय का सवाल है जहां तक घटनाओं का सवाल है ष्तिरिछष कहानी घटना प्रधान कहानी है जबकि ष्पिताष कहानी में एक थोड़े समय की भीतर घटी हुई घटना जो ठहरे हुए समय की भीतर घटना की कहानी है। ष्पिताष कहानी में देखेंगे अतः में वहां एक संबंधगत तनाव ब्याख्यांकर्ता को होती है। ष्तिरिछष कहानी में लगेगा कि जैसे भले ही पिता एक प्रमुख चरित्र है लेकिन व्याख्यानकर्ता का जो पिता के प्रति जो संबंध है वह संबंध बहुत खुलकर नहीं आता । जबकि पिता कहानी में उन दोनों का जो संबंदगत तनाव है वह उभर कर सामने आता है जहां तक तिरिछ कहानी तमाम घटना प्रधान कहानी है तो पिता ठहरी हुई कहानी है और मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है जबकि तिरिछ में पिता जरूर ग्रामीण है लेकिन अतः वह व्यवस्था के तमाम सारी संजाल को उपस्थित करने वाली कहानी है ।इसके अलावा कह सकते हैं की कहानी जहां पर खत्म होती है क्लाइमेक्स के बाद कहानी जब ढलान पर आती है और अपने उपसंहार की तरफ बढ़ती है तो दोनों कहानी का जो अंत है बड़े ही प्रभावशाली रूप में सामने आती है दोनों दो अलग.अलग भवभूति से ग्रहण करती है ।

ज्ञान रंजन की ष्पिताष कहानी का जो भाषा है वह मध्यवर्गीय जीवन समाज के सहज शब्दए देशज शब्द एपरिवार में प्रयुक्त शब्द का इस्तेमाल हुआ है ।यानी की कहानी एक प्रकार से पारिवारिक जीवन में जो तमाम सारे मुद्दे है उसके ईद घूमती है। ष्तिरिछष कहानी का जो भाषा है वह व्यवस्था और पूंजी राजनीतिक मनुष्य विरोधी शक्तियां है ।उसके पृष्ठभूमि में पिता के समूचे संघर्ष को व्यक्त करती है ।और उस कहानी में स्मृति एस्वप्नए संघर्ष की बड़ी भूमिका है ।उसे भूमिका का प्रकट करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग उदय प्रकाश ने किया है वह भाषा एक प्रकार से अवधारणाए नगर भाषा से युक्त कहानी है ।एक तरफ से पूंजी और आधुनिक की तकनीक के जोड से संरचना बन रही है ।समाज और विकास को अभिव्यक्त करने वाली भाषा है।

निष्कर्ष:

अंत में यदि दोनों कहानियों का प्रमुख रूप से तुलनात्मक अध्ययन करें तो निष्कर्ष के तौर पर आप देखेंगे कि ष्तिरिछष कहानी स्थिति की भयावहताए दहशत और मानवीय की परिवेश के बीच आदमी की असहायता की कहानी है ।जबकि ष्पिताष कहानी संयुक्त परिवारों के विघटन के दौर में आए हुए आधुनिक भावबोध है ।उस आधुनिक भावबोध को सहज रूप से स्वीकार न करने की कहानी है। पूर्ण रूप से यही दोनों कहानी का अंतर है।